

नं० ४० मास ११

१०६ श्री भद्रपद
पूजा पक्षोत्त

ASHA ARCHIVES ३५५

ग १ श्री गणेशाय नमः सप्तमी वरुणस्य सुभाद्रपद शुक्ल पक्षे

सम्वत् १८१ गेतीसीसवे १६६४ थ गुथिस ॥ ३ गुथिसागु तन्यमालक

श्रीश्रीश्रीजोतिशानंदराजोपाध्याय
" पट्टको श्रीबंदन पूरघरकोयोपुस्तक
श्रीश्रीमसेनयावासेबाजोरिसीरुयागु ७४
सकलयागु गुथिस ८८४ सकलकाबगु गुथिस
लयेपायेमा सद्गोपायागु गुथिस लिपायागुथिस तनो गुथिस

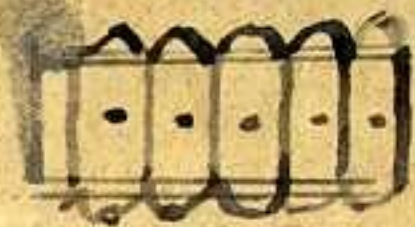
माहनि॥ वि साचा॥

माहनि
च

सगं
सगं

सगं
सगं

७ त ८



पंचवलि



वलि



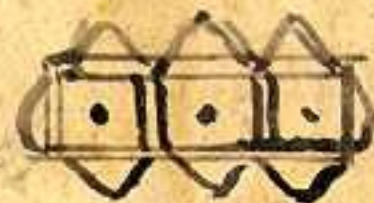
व



लि



वलि



त्रिवलि

॥ आचार्य

शीलीमहेनवाय॥ ॥ अथ पूजायद्वितिलिख्यता ॥ मालका
धागासनशायाओपश्चवलिद्विवलिमूलवलिमासम्वाततय
ऊअपिष्ठाचवलिसम्वाततयस्वअपिष्ठाचिनीवलिसमासन
यभलानवतल(ग)ऊजाजूदिनमालकावायचनस्वानखेल॥
यऊमाननपूजारुष्टिजायकंवाक् ॥ मानव(ग)यऊमानस्य

यथाऽपि मुक्ताकरुलया अर्थं श्रीमत्कृष्णीहीमते नवहृदात्रकस्य
 रुक्मजीरुध्वानयति स्म यतिवाचिक यथाऽपि कियत्पञ्चान
 पूजानिमित्तार्थं कर्तुं ॥ तज्ज्वायानका याता ॥ नासिय ॥ सूर्या
 धी ॥ गुननमस्कात्र ॥ न्यासाद्यप्ययूजात्मपूजार्कं ॥ मोहनीरु ॥
 मालिनीप ॥ १० ॥ यच्च वलिविय ॥ समयानेकायः तर्क्य ॥ ॥ श्रीमं

उद्धृत्

वरुणावाहनं ॥ त्रिभुक्तिः त्रिदवपूजा ॥ नवात्म ॥ क्रमः मूलस्मना
 नं ॥ ॥ विष्णुपरीमते नव न्यासः ॥ ॥ त्रिंशत्तद्वयादिषु ३३ न्यासः ॥
 गगवर्क न्यासः ॥ त्रिंशत्तद्वयादिषु ३३ न्यासः ॥ त्रिंशत्तद्वयादिषु ३३ न्यासः ॥
 त्रिंशत्तद्वयादिषु ३३ न्यासः ॥ त्रिंशत्तद्वयादिषु ३३ न्यासः ॥ त्रिंशत्तद्वयादिषु ३३ न्यासः ॥
 त्रिंशत्तद्वयादिषु ३३ न्यासः ॥ त्रिंशत्तद्वयादिषु ३३ न्यासः ॥ त्रिंशत्तद्वयादिषु ३३ न्यासः ॥

ॐ

ॐ यन्मिमवकायसहृदवमूर्ध्नि यथापू॥ ॥ वृत्तिवकु न्यासु॥

॥ ॥ तग ४ पा द ष ठ ऊ न्या स ४ ॥ त्रैं ॐ श्रीं कीं कां यं तं लं वं षं वं स दं कं कं सा दं
स ह द या दि ष ठ ऊ न्या स ॥ ॥ ग गान व त त्वं न्या स ४ ॥ त्रैं ॐ ऐं यु कृ ति ग त्वा
य पा पृ ५ ॥ आ क्ष त्र ॥ त्रैं ॐ पू त व त त्वा य पा पृ ५ ॥ लिं ग ॥ त्रैं ॐ नी ति त
त्वा य पा पृ ५ ॥ ना हो ॥ त्रैं ॐ का ल त त्वा य पा पृ ५ ॥ द्वा दि ॥ त्रैं ॐ मा या

गत्यायवायू॥ क॥ ॥ ॐ ॥ विद्या गत्यायवायू॥ म॥ ॥ ॐ ॥
 जिव गत्यायवायू॥ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 ला॥ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 न्यास॥ ॥ गगनासनं ॥ ॐ ॥ आकाशादि॥ ॐ ॥ तत्कृपयासनायवा
 यू॥ गगनासनं ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

मूलेश्वर लि॥ ॐ नमो जीर्णी श्रीं श्रीं मय स्वाहा जग नियूष्या निही मही मा ह्यं नमः ॥
 सोवर्ध्नी पीत वासः सितयस्त्रोपवीति नमः ॥ नाना रत्न दण्डा रात्रि
 शं सितवर्कुमनाहनं ॥ परं लोके मला रात्रिः स्यात्तु यमनतु
 के ॥ अथ नयूष्या पादुका ॥ ॥ आवाहनादि ॥ मूलं श्रीं श्रीं महेतव
 ॐ हा गच्छ २ ॐ हा गच्छ २ ॐ हतिष्ठ २ ॐ ह संनिहिता एव २
 ॐ ह संनिहिता एव २ मम पादुका गृहा ॥ अथ गुह्यं तात्र य
 पादुकां पूजयामि नमः ॥ मूलं जषवालि श्रीं मही मा ह्यं नमः ॥ ४

दिग्वन्धनं नृणां निमज्जा ॥ ॥ पाशादिभ्यस्तुल्यं तस्याद्यं
 श्रीहीमते नवाय नमः ॥ अथ अर्घ्यं आचमनीयं स्नानचन्दनं
 सिद्धं तत्कृतं पूज्यं धूपदीपनैव्यद्यत्पर्यन्तं नवाचमनीयं
 ॥ ॥ अथ अर्घ्यं ॥ नमो हं श्रीहीमन्ध्याय संपूर्णं दीपदीपकं
 सहिनायकाय ॥ अथ अर्घ्यं ॥ ३ ॥ नमो ह्यर्घ्यं श्रीहीमन्ध्याय संपूर्णं दीपदीपकं

मौं श्री गीमध्वनाय वृकादनाय महादेवाय नमः कालद
यै लोपमगदाधनाय वाद्यनाय श्री गीमध्वनाय विष्णवे
श्री गीमध्वनाय शङ्खलियुष्माय पूज ॥ ३ ॥ नमः ॥ आवाह
नादि ॥ गदाय ॥ नमः ॥ श्री गीमध्वनाय विष्णवे वक्रादनाय
धीमही गन्त्री नृपुत्रा दया ॥ ॥ या नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

नमः साहसं सदाय ॥ १

आं कीं कौं यंत्रं लं यंत्रं संहं कं दं दया नमः आदि ॥ वलिं ॥
नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
विद्या नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
॥ ॥ गवः सपंचयानवपूज ॥ ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
पापूज ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

यगयवृकोदतायकूत्रकुचकमानिहवलिंगृफरस्वहा॥या
निमृदा॥॥अथमूलवलिहायक॥उं हं हं हं हं नीलजीमूतसंका
षाधात्रदंष्ट्रायावहं।उद्धकंषाचत्रकाकंकुगयालंवृकादत्र॥
सर्वविघ्निनाशनकूगयालायकांकींङ्क्षीनृयैष्यतश्रीगुप्त
स्यतश्रीश्रीश्रीवगत्रवलिंगृफरकुमस्रवत्रदामस्रहा॥

[illegible]

[illegible]

कमलकमल लब्धखलु लब्धखलु लब्धखलु ॥ घंघाभाठ ॥ नल्लेवचद्यु
 धान्यकमवच ॥ कृताभायाजललाक्षा एकाभा ॥ यमल्लेवचद्यु ॥ टंकपाः
 नीलनूवद्यु ॥ लामभाठट कर्णकशा ॥ दलीकानागशिगकाथवि
 ग्राददूगल्लेवच ॥ धनदानागकर्णल्लेवचद्यु ॥ रुटकागकशा ॥ वीन
 सिंहीर कृताकमद्युगल्लेवचद्यु ॥ गानवल्लेवचद्यु ॥ लामभाठट

पिङ्गलवर्वाधकक्षवि। कला लगी कडु पु लयाम्द निखन मरु
 यष्टुकांगदहाय तीषण नख क्षति ल तलप र रुसर किन्दर हितु
 रगुत्तर मन्त्र रित्ति र मित्रि र लख र खादिर पिण च नाथाय म हा
 हेत वायवा पू॥ जर्व वलिं॥ प्रिभूल म्दा॥ ॥ खडा सयि साचिनी
 पूजा॥ जेँ साँद दयादि न्यास॥ जेँ न नास नायवा पू॥ ॥ ॥

२५५ सितांगदि

२५५ सितांगदि कडास ग न्य ॥ ५ ॥

शुष्क वा लार्क वर्ध्ना राशु कं ग दास्ति हवी गां व गार य क न क्षयः
 वाद्युचर्मी वृत्त कठो॥ ॥ ॥ न पृष्यं न म॥ ॥ ॥ लि॥ जेँ सँ ले पिण
 वि न्ये छीया पू॥ ॥ ॥ वलिं॥ जेँ सँ ह उ छी ग काटि पु रा स्त न
 चय निम्मी स द ही सी ष ड द र धि न ये ल ला णि न न ख डुं ड य न
 क वर्ध्ना ये द्वा ल म ख ग ति डि द्वा वि ला ल रिष धा क्री साँ सी सँ खुं

सारयां रत्नोरजकि नीरवनीयिष्ठा चिकोमहाहं तवीपायूज ॥ अर्वव
 लिं ॥ था नीमडा ॥ ॐ ॥ निर्व्वानगयसगुहयूजा ॥ ॥ थशमासकावलि
 मल ॥ ॥ समयवलिहायक ॥ ॐ ॥ सर्व्वपी ॥ भयपी ॥ निष्ठात्रापदी
 प्रभवच ॥ कृणीपकृगुसंदाह सर्व्वदिग्गसंस्तिगश ॥ यागिनीयागवी
 प्रदा ॥ सर्व्वगुसनागगश ॥ ॐ ॥ दुयर्व्वमहाचक्रं श्रीनाथ्यावत्रदा

मम। यत्क्रासास नंदवीगुत्रूपा दार्चनलता॥ सर्वसिद्धिषु
साधामंदवीगणारवत्सदा। वीताशंथागिनीनांचय दीषन्निम
हीतल। गंदलुगवलिंदवीसमयाचात्रभत्रक॥ १॥ निस्मृतिम
न॥ पृष्ठिमांसमदास्त्रिजीवितं। निकृन्तयमुदूषा नांथागिनीगण
सकृत्। कूदूकादिकूस्वप्रातिदूत्रिमियदूषाविता। निकृन्तं

यमुद्रुक्ष नाथागिनीगणसंकुला। अकातादिवश्यपीठमयः।
सातायुकीर्तिताडावधीधनुसंदाहादिष्णसुविदिष्णसूचामहा
पातालवक्त्रधुसर्वरुनानुप्रवृत्तायागिनीयागयूकास्मासमति
शक्तिसाधका। वीरकर्मसूवीरदुस्यतिष्ठन्निदवता। सि
द्धाब्धपूतकार्यसाधकाक्रिमिसाधिनीशानगप्रवाशमवाजुट

श्रीगणेशाय
श्री

श्रीसुखलोक २ श्रीरामानुजाय प्रणमः
श्री

स्वस्ति श्रीमहाशायक्य

नडा चारु ११ वडमिह १२ ॥

१०६

ASHA ARCHIVES

3414

श्री श्री म र्सेन पूजाम ध्वनि
ध्वने

आंवासनिधनवापिकुर्येकवृक्षवाष्मभनसागृमधुल। नानात्रय
धनान्यपिवटजाविविधानिच। गचसर्धपिसंगुका बलिंगृकनु
मसदागतधगगायदंतवासुधैसतगरु लपुदी। प्रालष्टंय-मः
याकर्मयत्कनिकासियन्कृत्। वलियूषापुष्पभनर्तगुकासम
चिनिका। सर्वकर्मणि सिद्धनु सर्वदोषयुष्मनुम। शिव

भक्तिप्रसादनपीकृद्धिकागानंनमाम्यहं॥ त्रिंशसमस्तमनुवि
रति॥ उक्तानकति॥ ॥ विन्दुययाथनसीलाकवास्यचन्दनादिच्छ
य॥ धूपदीपसमयहानकृय॥ गवाजगधवाज नियतककृय॥
रुलमलपकानगाम्बूलमखसुद्धिदकाप्रदार्थकृय॥ गिद
वादिः पूजायानाकथनः वर्यधयाय॥ ॥ निखलकंगुथिहल

नगायजानकैः यावहावा ॥ आदि ॥ गायहाल ॥ ॥ त्रिदवादिः थ
उमा लकाऊपयाय ॥ मूलं १०८ ॥ ऊहायाहकात्रऊपः खहायामका
त्रऊपयाय ॥ निर्वीर्नैयाय ॥ ऊपसमर्थ्य ॥ ॥ मशुलदयक ॥
मगुयाय ॥ त्रिदवादिथहामालका ॥ ॥ अथहीमहधनयाहागुः
मदवीका लारिहिन

नीलंजीमूगवर्धं सकललिवमयं हेतवं चागुहं त्रोटं त्रोटायगात्रं
कलितलिवलिवं दुर्द्धकं सदर्दुं । हीमाऊहीमनादं नखकत्र
चनधं कालमालं कनालं ॥ ॥ लोकाविप्रमानं यत्रमपत्रपदं
हेतवं क्रुगुपालं ॥ ॥ शिवहाकिस्वतूयाय व्यापिनविष्वतू
पिष्ठा । सर्वइ४खयसंम्याय नमस्तुतस्वामिन ॥ अथतुमा

वली व्यास हनुमान विहीयता। कृपाय पर्णनामाय मार्कण्डे
याय नमो भुक्ते ॥ श्रीसंवत्सामधुलान्नयादि ॥ क्रमाश्रुति ॥ ॥
मानव (म) गृह्यक्रमानस्य यथा मम क्रूरुलया यथा श्रीमहर्षि
श्रीश्रीमतेन वल्लभानकस्य रुक्मजीरक्षित्वात्रय निष्कायति वा
षिकयथा मकिय (अ) पचान पूजा संपूर्णार्थं जूगन्ध यथाधू

पदीपार्चनविधिस्तसर्वविधिप्रतिपूर्ध्वमश्रु ॥ सकलसर्नक
(म) लतनक ॥ दक्षिणकाय ॥ ॥ चूविंशयाय ॥ निम्नवाहा
ननावे पूजायाय ॥ निम्नसनं संकययाचके ॥ ज्ञावामूलदा
लेन गव्यनयाय ॥ मधुकुय ॥ मगविय ॥ ॥ वधुथासंसाहा
मायाहा गुयाय (अ) गुगन्धादि ॥ ॥ यनथकालिनिस्तुंदवत्

य॥ ॥ आचार्यपूजायाचक॥ दक्षिणावीय॥ वृकनक्षत्र॥ सगुणः साह
 निष्काम॥ अथवा कलपूजायाय॥ ॥ आद्योथंथक॥ ॥ स्नानादिचित्तस्नान
 यदवक॥
 कल॥ अक्षलि॥ ॥ मं महालक्ष्मीविषयापूजा ॥ उयस्कागुगसिंहास
 नमहालक्ष्मीस्तुलाकृविन्दुमदिका॥ ध्वजवधूर्तिनगाचचक्रध्वरी
 नमस्तुभ्यंभुवनक्षदि॥ ॥ आगनवाक्य॥ ॥ यथापि०

॥ टं धेयुधेयविषयापूजा॥ उयस्कागु॥ वेष्टुवीनार्कमात्रराहति
 तांगीहृतिगवाक्षिनी॥ गजकृविन्दुमद्रायवेष्टुवीचनमस्तुभ्यं
 ॥ ॥ आद्योक्तगङ्गास्नानक्षससा॥ स्नानादिचित्तस्नानखल॥ कर्तव्यं॥
 उं कुं कुं कुं विष्णुं कथं पापूजा॥ उयस्कागु॥ यागं कियन्महिनामधु
 उं कुं कुं कुं विष्णुं कथं पापूजा॥ उयस्कागु॥ यागं कियन्महिनामधु

वगमयापद्यसंस्कारयया। अक्रिणीयनूषाकृतिमिप० गमनागो
तथादवती वधूनिनां च वि (लो) पिगावे इविषमण किं पनां नो मि
तां ॥ अगनवाकाय ॥ ॥ धनं लिख हानेन नथं ऊडा सथं थके ॥ ॥
लिउानं हनम्या ॥ उंजीं श्रीं नाकसी ॥ ॥ धी पापू ॥ ॥ हीमायायन
महा कीहि डिंवी नाम गाकसी। हि डि तथा सत्रममा प्रम सर्व दुःख
विनाहानी ॥ अगुगन्धादि ॥ धन अगं वाक्य ॥

खडा स विष्वकस्मा ॥ उंज्जं कं जीं श्रीं विष्वकस्मा पापू ॥ ऊपस्मा
॥ मधिनत्र पुवा नादि धागुमृहिक काठकं। निम्माने श्वनहस्मा
य विष्वकस्मा यननम ॥ ॥ लिकी र लणी ॥ अंयं चामधु वि
धेयापू ॥ ऊपस्मा ॥ चामधु पुनमा र रातका शूकां गत्र पिनी
॥ उमत्रयदां गहस्मा च चामधु येन मम ॥ ॥ अगुगन्धादि

अगं वाक्य ॥ ॥ काथक ॥ उचं कीमा गीविश्व वापूश ॥ उपका
ग ॥ कीमा गीमयूता गूडातकां गीतक वाणिनी ॥ ॥ अकृक विन्द
मदाच गुष्ट स्थिती नमस्तुते ॥ अरुगन्धदि ॥ अगं वाक्य ॥
थन लिदह लिमधुसकिगुलन नाश इह उना ॥ सैगं मा
हनि ॥ विसर्जनया नाशक्यो ॥ एकानेकदवा आसिद्धिद

॥ यजमानस्तु ॥ अविक्ककादिचन्दनाद्यासिवातः तसितया
उ ॥ स्वा नविर्य ॥ न्यासलिनी ॥ सूर्यसाक्रिथाय ॥ ऊडावलिः
ऊडासं ॥ खडावलिखडासं ॥ मूलवलिः दधुसं नय ॥ अ
नवलषुनिचपादया ॥ हीमस्यनपूजाविधीशसमाफभुतं
॥ ॥ गुप्तवाद्यग्रहवर्षः पोषचसिने पक्रक ॥ सिद्धिनागा द्वि

यथाचार्यलिखितं सन्तु वृद्धिनां ॥ सम्बन्धेन त्रयोविधं
पूर्यमाणं सिद्धिना तामसाया रुल्लुहं ॥ धोषकृष्णपूजाप
द्वगिरुल्लुहं ॥

॥ ॐ ॥

प्रस्तावाया नया

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥







मिमीसम्यते १५४ सीधवयाव
साधः सिवेनेन सिसियावाले
कविन्दककाडान

सम्यग १५४ माथिमायापा
लेः एवानिर्ककाडान

सम्यग १५४ ० सिद्धिना
नाडानाः रुसिमाधयापाले

सम्यग १५४ वगयनाकृष्णयावा
सिद्धिनाकोडाना

सम्यग १५४ ० मिमिनि
स्येलेस्ययावद्यजध्वन
उक्तकायायाय कर्णयक्ति
द्यध्वकृष्णयायः वालि
सिपसकोकः कावालिप
मिग